शारदा पुस्तकालय
(संभावना शो. द. केन्द्र)
क्रमांक ..... 206

# माँ

## (गायत्री मन्त्र की महिमा)

महात्मा आनन्द स्वामी

Book No:-
Donated by Sh. P.N. Pandit
Nagam/Nagrota Jammu.

॥ ओ३म् ॥

# माँ

Book No:-
Donated by Sh. P.N. Pandit
Kulgam/Mubhi Jammu.

लेखक

## आनन्द स्वामी सरस्वती

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
4408, नई सड़क, दिल्ली-110 006 (भारत)
दूरभाष: 31023714, 23977216
E-mail : ajayarya@vsnl.com
Web : www.vedicbooks.com

मूल्य : 5.00 रुपये

संस्करण : 2004

मुद्रक : स्पीडो ग्राफिक्स, दिल्ली-51

* ओ३म् *

# माँ

माँ की गोदी मिलते ही शिशु का रुदन पता नहीं कहाँ चला जाता है ? माँ की गोदी उसे निश्चिन्त बना देती है, अभय प्रदान कर देती है, अमृत-दुग्ध पिलाकर आनन्द सागर में निमग्न करा देती है, कैसी है प्यारी यह गोदी, माँ की ? परमात्मा ने जैसा हृदय माता को दिया है वैसा हृदय और किसी को नहीं दिया और बच्चे भी कष्ट क्लेश में माँ ही को याद करते हैं—कवि ने ठीक ही कहा है—

**जब निराशा दिलों पर छा जाती है ।**
**दुश्मन से भी नाम तेरा जपवाती है ॥**
**सम्भव है कि सुख में भूल जायें बच्चे ।**
**लेकिन उन्हें दुख में माँ ही याद आती है ॥**

और वह जो सब की माँ है उसके हृदय का क्या कहना ? सारी सृष्टि के प्राणी उसी की सन्तान हैं, माँ के रूप में प्रभु की आराधना शीघ्र सफल होती है, और वेदमाता गायत्री—सावित्री माता इस आराधना का बड़ा सुन्दर साधन है—गायत्री को माध्यम बनाने वालों के अनुभव ऐसे ही हैं, गायत्री मन्त्र का जप और यम-नियम का पालन या तदनुकूल आचरण लोक परलोक सुधारने और संवारने वाला है—

अथर्ववेद काण्ड १९ सूक्त ७१वें का प्रथम मन्त्र है—

**ओं स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् । मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥**

इस मन्त्र का देवता गायत्री है । अर्थात् इस मन्त्र में गायत्री की महिमा प्रकट की गयी है । जिस मन्त्र का जो देवता हो वही उस मन्त्र का विषय होता है । इस मन्त्र का अर्थ यह है–

**द्विजानाम् पावमानी :** द्विजों को पवित्र करने वाली

**वरदा :** वर देने वाली

**वेदमाता :** गायत्री की

**मया स्तुता :** मैंने स्तुति की है ।

**प्रचोदयन्ताम् :** उसका विस्तार, प्रचार करो । वह **आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्–** आयु, स्वास्थ्य, प्रजा–सन्तान, पशु, कीर्ति–यश धन और ब्रह्मतेज ।

**मह्यं दत्त्वा :** मुझ को देकर

**ब्रह्मलोकं व्रजत :** ब्रह्मलोक को पहुँचाओ ।

वेद भगवान् के इस मन्त्र से यह आदेश मिलता है कि गायत्री माता इस लोक के सारे पदार्थ, सारे वैभव प्रदान करती है, और फिर प्रभु के चरणों में भी ले जाती है । गायत्री माता मानव के दोनों लोक सुधारती है । इसीलिए इस को ऋषियों, मुनियों और सब शास्त्रों ने सब से ऊँचा स्थान दिया है । श्री मनु भगवान् ने तो गायत्री या सावित्री को ब्रह्म का मुख कहा है ।

**ओङ्कारपूर्विकास्तिस्त्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः ।**
**त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ॥**

मनु० २ । ८१॥

तीन मात्रा वाले ओंकार पूर्वक तीन महाव्याहृति और तीन पाद वाली सावित्री—गायत्री को ब्रह्म का मुख (द्वार) समझना चाहिए ।

मनुस्मृति में गायत्री की महिमा प्रकट करने वाले दूसरे अध्याय के ये श्लोक विशेष महत्त्व रखते हैं—

**त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः पादं पादमदूदुहत् ।**
**तदित्यृचोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिः ॥७७॥**

परमेष्ठी ब्रह्मा ने तीनों वेदों से ही 'तत्सवितुः' इस सावित्री की ऋचा का एक एक पद निकाला ।

**एतदक्षरमेतां च जपन् व्याहृतिपूर्विकाम् ।**
**सन्ध्ययोर्वेदविद् विप्रो वेदपुण्येन युज्यते ॥७८॥**

इस (ओ३म्) अक्षर और व्याहृति पूर्वक (भूर्भुवः स्वः) सावित्री—गायत्री को दोनों सन्ध्याओं में जपता हुआ वेदवित् विद्वान् वेदपाठ के पुण्यफल का भागी होता है ।

**सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतत् त्रिकं द्विजः ।**
**महतोऽप्येनसो मासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते ॥७९॥**

जो द्विज एक मास तक बाहर एकान्त स्थान में प्रतिदिन सहस्र बार गायत्री मन्त्र का जप करता है, वह बड़े भारी पाप से भी ऐसे छूट जाता है, जैसे सांप केंचुली से।

**एतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया ।**
**ब्रह्म-क्षत्रिय-विट्-योनिर्गर्हणां याति साधुषु ॥८०॥**

इस गायत्री मन्त्र और समय पर अपने कर्मों से हीन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये सज्जनों में निन्दित होते हैं।

**ओङ्कारपूर्विकास्तिस्त्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः ।**
**त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ॥८१॥**

यही तीनों 'ओं भूर्भुवः स्वः ।' गायत्री की व्याहृति

वेद का सार है और परमात्मा की प्राप्ति का द्वार है। क्योंकि शुद्ध बुद्धि बिना ज्ञान नहीं हो सकता और गायत्री शुद्ध ज्ञान प्राप्त करने का वैज्ञानिक साधन है।

**योऽधीतेऽहन्यहन्येतांस्त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः।**
**स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान् ॥८२॥**

जो आलस्य छोड़कर इस गायत्री मन्त्र का नित्यप्रति तीन वर्ष तक जप करता है, वह मरने के पश्चात् पवन-रूप पवित्र और आकाश रूप होकर परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

**एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामाः परं तपः।**
**सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात्सत्यं विशिष्यते ॥८३॥**

एकाक्षर ओ३म् परब्रह्म है, प्राणायाम ही परम तप है, गायत्री से बढ़कर और कुछ नहीं, मौन से सत्य बढ़ कर है।

**पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्।**
**पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात् ॥१०१॥**

प्रातःकाल की सन्ध्या के समय सूर्य के उदय तक गायत्री को जपता रहे और सायंकाल की सन्ध्या में अच्छे प्रकार से तारे निकलने तक बैठा जाप करता रहे।

**पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेन्नैशमेनो व्यपोहति।**
**पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम् ॥१०२॥**

प्रातः सन्ध्या के समय बैठकर जप करता हुआ मनुष्य रात्रि का पाप दूर करता है और सायंकाल के समय बैठकर जप करता हुआ दिन का किया हुआ पाप नाश करता है।

**अपां समीपे नियतो नैत्यिकं विधिमास्थितः।**
**सावित्रीमप्यधीयीत गत्वारण्यं समाहितः ॥१०४॥**

वन में जाकर जल के समीप बैठ इन्द्रियों को रोककर, एकाग्रचित्त से नित्य की विधि कर चुकने पर गायत्री मन्त्र का जप करे ।

**यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः।**
**तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु ॥१०७॥**

जो जितेन्द्रिय और शुद्ध होकर एक वर्ष तक स्वाध्याय (वेद का पढ़ना, ओ३म् का जप गायत्री मन्त्र का जप) विधि पूर्वक करता है, उस को वह दूध, दही, घृत और मधु नित्य देता है ।

मनुस्मृति के दूसरे अध्याय के इन श्लोकों से आप को प्रकट हो गया होगा कि भगवान् मनु गायत्री जप का कितना महत्त्व समझते थे । और केवल इसी अध्याय में ही नहीं, अन्यान्य स्थलों में भी भगवान् मनु ने गायत्री जप पर बड़ा बल दिया है । ग्यारहवें अध्याय में यह लिखा है—

**सावित्रीं च जपेन्नित्यं पवित्राणि च शक्तितः॥२२५॥**

यथाशक्ति नित्य गायत्री का और पवित्र मन्त्रों का जप करे ।

गीता में भगवान् कृष्ण ने गायत्री के सम्बन्ध में यह कहा है—

**बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्॥१०।३५॥**

मैं गायन करने योग्य श्रुतियों में बृहत्साम हूँ, और छन्दों में गायत्री हूँ ।

पारस्कर गृह्यसूत्र में २, ३, १० में यह आदेश

है कि–

**सर्वेषां वा गायत्रीमनुब्रूयात् ।**

गायत्री का उपदेश सब को करे ।

श्री शंकराचार्य जी बादरायण के ब्रह्मसूत्र, १।१।२५ पर शारीरक भाष्य में यह कहते हैं कि–

गायत्री मन्त्र के जप से ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

छान्दोग्योपनिषद् ३।१२।१ में लिखा है–

**गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किञ्च ॥**

ब्रह्माण्ड में जो कुछ है वह गायत्री ही है ।

व्यास मुनि कहते हैं–

**न भिन्नां प्रतिपद्येत गायत्रीं ब्रह्मणा सह ।**
**सोऽहमस्मीत्युपासीत विधिना येन केनचित् ॥**

गायत्री और ब्रह्म में भिन्नता नहीं है । अतः जिस किसी भी प्रकार से ब्रह्मस्वरूपी गायत्री की उपासना करे।

बृहदारण्यकोपनिषत् का यह आदेश देखिए, गायत्री का कितना ऊँचा पद बतलाया है–

**भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षरं ह वा एकं गायत्र्यै पदमेतदु हैवास्या एतत्स यावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्या एतदेवं पदं वेद ।**

बृहदा० ५।१४।१॥

भूमि, अन्तरिक्ष, द्यौ ये तीनों गायत्री के प्रथम पाद के आठ अक्षरों के बराबर हैं । अतः जो गायत्री के प्रथम पाद को जान लेता है, वह त्रिलोक-विजयी होता है ।

शृंगी ऋषि ने गायत्री को मोक्ष का मूल कारण बतलाया है–

**सर्वात्मना हि सा देवी सर्वभूतेषु संस्थिता ।**
**गायत्री मोक्षहेतुर्वै मोक्षस्थानमलक्षणम् ॥**

गायत्री देवी समस्त प्राणियों में आत्मारूप से विद्यमान है । गायत्री मोक्ष का मूल कारण और मोक्ष का स्थान है ।

ऋषि विश्वामित्र जी इस मन्त्र के द्रष्टा हैं, उन्होंने गायत्री जप का यह अनुभव बतलाया है–

**सप्रभं सत्यमानन्दं हृदये मण्डलेऽपि च ।**
**ध्यायन्जपेत्तदित्येतन्निष्कामी मुच्यतेऽचिरात् ॥**

प्रकाश सहित सत्यानन्द स्वरूप ब्रह्म का हृदय में और सूर्य–मण्डल में ध्यान करता हुआ, कामना रहित होकर यदि गायत्री मन्त्र का जप करे तो अविलम्ब संसार के आवागमन से छूट जाता है । ऋषि याज्ञवल्क्य जी यह आदेश देते हैं कि गायत्री वेदों की जननी है, पापों का नाश करने वाली है ।

भारद्वाज ऋषि का कथन है कि ब्रह्मा आदि देवता भी गायत्री का जप करते हैं । गायत्री ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली है । अनुचित काम करने वालों के दुर्गुण गायत्री के कारण छूट जाते हैं ।

आयुर्वेद के महर्षि चरक का आदेश है कि ब्रह्मचर्य पूर्वक जो व्यक्ति गायत्री की उपासना करता है और ताजे आंवलों का रस सेवन करता है वह दीर्घजीवी होता है ।

गुरु वशिष्ठ जी ने यह आज्ञा दी है कि मन्दमति, कुमार्गगामी और अस्थिर–मति भी यदि गायत्री की उपासना का सहारा लेता है तो वह भी पवित्र होकर

सद्गति को प्राप्त होता है ।

देवीभागवत के द्वादश-स्कन्ध अध्याय ८ में तो शेष सारी उपासनाएँ छोड़कर गायत्री साधना का ही आदेश व महत्त्व बतलाया है ।

**न विष्णूपासना नित्या वेदेनोक्ता तु कुत्रचित् ।**
**न विष्णुदीक्षा नित्यास्ति शिवस्यापि तथैव च॥८८॥**
**गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता ।**
**यया विना त्वधःपातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा ॥८९॥**
**तावता कृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि ।**
**गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ॥९०॥**
**कुर्यादन्यन्न वा कुर्यादिति प्राह मनुः स्वयम् ॥९१॥**

"विष्णु की उपासना नित्य सनातन नहीं है । वेद में कहीं भी विष्णु की उपासना का विधान नहीं, इसलिए विष्णु की दीक्षा सनातन नहीं । इसी प्रकार शिव महादेव की भी उपासना सनातन नहीं, किन्तु गायत्री की ही उपासना सनातन है । सब वेदों में इसी की उपासना और दीक्षा का विधान है, जिस के विना ब्राह्मण का सर्वथा अधःपात हो जाता है । गायत्री-उपासना मात्र में सारे द्विजों की कृतकृत्यता है । अन्य उपासना व दीक्षा की आवश्यकता नहीं, इसी से मोक्ष प्राप्त हो जाता है । अन्य कोई उपासना करे या न करे स्वयं मनु जी ने ऐसा कहा है ।"

गोपथ ब्राह्मण के पूर्व भाग के पहले प्रपाठक की ३१ से ३८ कण्डिका तक गायत्री मन्त्र की बड़ी चित्ताकर्षक व्याख्या की गयी है । वहाँ मौद्गल्य और मैत्रेय के सुन्दर प्रश्नोत्तर हैं । उनमें मौद्गल्य ने बतलाया

है कि गायत्री में जिस सविता देव का वर्णन है, उसका प्रयोजन यह है कि जैसे वाणी मन के विचारों को प्रकट करती है, इसी प्रकार गायत्री सविता देव का वर्णन करती है । इन दोनों का ऐसा ही सम्बन्ध है, जैसा कि गर्मी और सर्दी का, मेघ और वर्षा का, बिजली और गड़गड़ाहट का, प्राण और अन्न का, यज्ञ और दक्षिणा का, वायु और अन्तरिक्ष का इत्यादि ।

निष्कर्ष यह है कि जैसे ये जोड़े एक दूसरे के सहारे हैं, इसी प्रकार सविता और सावित्री हैं । इस विषय को भली भांति समझने के लिए मौद्गल्य ने मैत्रेय से व्रतधारी होकर तप करने का आदेश दिया, और फिर ध्यान जमा कर, भगवान् के पास पहुँच कर परम शान्ति प्राप्त करने और सर्वत्र उस आध्यात्मिक शान्ति का प्रचार करने का आदेश दिया ।

महादेव शिव और पार्वती का एक सवाद गायत्री के सम्बन्ध में 'गायत्री मञ्जरी' में लिखा है । वह भी शिक्षाप्रद है । उसका कुछ विवरण यहाँ दिया जाता है—

एक बार कैलाश पर्वत पर विराजमान महादेव शिव से पार्वती जी ने प्रश्न किया कि हे योगेश्वर ! आप किस योग की उपासना करते हैं, जिस से आप परम सिद्धि को प्राप्त हुए हैं ? महादेव जी ने कहा—

**गायत्री वेदमातास्ति साऽऽद्या शक्तिर्मता भुवि ।**
**जगतां जननी चैव तामुपासेऽहमेव हि ॥**

गायत्री वेदमाता है । पृथ्वी पर वह आद्या शक्ति कहलाती है । वही संसार की माता है । मैं उसी की उपासना करता हूँ ।

**यौगिकानां समस्तानां साधनानां तु हे प्रिये !**
**गायत्र्येव मता लोके मूलाधारा विदांवरैः ॥**

हे प्रिये ! विद्वानों ने समस्त यौगिक साधनाओं की मूलाधार गायत्री ही को माना है ।

**भूलोकस्यास्य गायत्री कामधेनुर्मता बुधैः ।**
**लोक आश्रयणेनामुं सर्वमेवाधिगच्छति ॥**

विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु माना है । संसार इस का आश्रय लेकर सब कुछ प्राप्त कर सकता है ।

**कलौ युगे मनुष्याणां शरीराणीति पार्वती ।**
**पृथ्वीतत्त्वप्रधानानि जानास्येव भवन्ति हि ॥**

हे पार्वति, कलियुग में मनुष्यों के शरीर पृथ्वी तत्त्व प्रधान होते हैं, यह तो तुम जानती ही हो ।

**सूक्ष्मतत्त्वप्रधानान्य-युगोद्भूत-नृणामतः ।**
**सिद्धीनां तपसामेते न भवन्त्यधिकारिणः ॥**

इसलिए अन्य युगों में उत्पन्न हुए सूक्ष्मतत्त्व-प्रधान मनुष्यों की सिद्धि और तप के ये अधिकारी नहीं होते ।

**पञ्चाङ्गयोगसंसिद्ध्या गायत्र्यास्तु तथापि ते ।**
**तद्युगानां सर्वश्रेष्ठां सिद्धिं सम्प्राप्नुवन्ति हि ॥**

फिर भी वे गायत्री पंचांग की सिद्धि द्वारा उन युगों की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियां प्राप्त कर सकते हैं ।

**गायत्र्येव तपो योगः साधनं ध्यानमुच्यते ।**
**सिद्धीनां सा मता माता नातः किञ्चिद् बृहत्तरम् ॥**

गायत्री तप है, योग है, साधन है और वह ही सिद्धियों की माता मानी है । इस गायत्री से बढ़कर अन्य

कोई दूसरी वस्तु नहीं ।

भगवान् शंकर ने अपने मुखारविन्द से गायत्री उपासना के इतने गुण गायन किये हैं, और स्वयं भी उसी गायत्री की उपासना करने का रहस्य बतलाते हैं।

ऋग्विधान में गायत्री जप के सम्बन्ध में कितने ही आदेश हैं । यह ऋग्विधान ऋषि शौनक का ग्रन्थ है । इसमें नाना कामनाओं को पूर्ण करने के लिए व्रत धारण करने और गायत्री अनुष्ठान का महत्त्व तथा विधि बतलाये गये हैं । एक श्लोक में यह कहा गया है कि गायत्री से बढ़कर इस लोक और परलोक के लिए दूसरी कोई वस्तु नहीं ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती गायत्री जप के सम्बन्ध में सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं–

जंगल में अर्थात् एकान्त देश में जाकर सावधानता पूर्वक जल के समीप स्थित होकर, नित्यकर्म करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण अर्थ–ज्ञान और उसके अनुसार अपने चालचलन को बनावे, परन्तु यह जप मन से करना उत्तम है । न्यून से न्यून एक घण्टा ध्यान अवश्य करे । जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं, वैसे ही सन्ध्योपासन भी किया करें । साथ ही मुमुक्षुओं के लिए महर्षि एक दूसरे स्थान पर लिखते हैं कि नित्यप्रति न्यून से न्यून दो घण्टे तक मुमुक्षु ध्यान अवश्य करे, जिससे भीतर के मन आदि पदार्थ साक्षात् हों ।

महर्षि के जीवन में आता है कि वह साधकों को गायत्री जप बतलाया करते थे । एक बार महाराज

ग्वालियर से आपने कहा कि भागवत सप्ताह की अपेक्षा गायत्री पुरश्चरण अधिक श्रेष्ठ है । मुलतान के एक व्याख्यान में महर्षि ने कहा कि गायत्री मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है और इसका जप सभी करते आये हैं ।

गुरुवर स्वामी विरजानन्द जी के जीवन की बातें सुनाने वाले कहते हैं कि स्वामी जी ऋषिकेश में गंगा जी के तट पर घण्टों गायत्री का जप किया करते थे।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस का गायत्री के सम्बन्ध में यह आदेश है कि गायत्री का जप करने से बड़ी शक्ति मिलती है । इस की साधना करके देखो कितना लाभ होता है ।

स्वामी विवेकानन्द जी का कथन है कि गायत्री सद्बुद्धि का मन्त्र है और परमात्मा से माँगने योग्य वस्तु सद्बुद्धि ही है । सद्बुद्धि से सन्मार्ग मिलता है, और सत्कर्म होते हैं, तब सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है ।

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गायत्री पर जो विचार प्रकट किये हैं, वे इस प्रकार हैं–

भारतवर्ष को जगाने वाला सरल मन्त्र गायत्री है। **ओं भूर्भुवः स्वः** । को व्याहृति कहते हैं । व्याहृति का अर्थ है, चारों ओर से एकत्र करके ले आना । पहले संसार के तीनों लोकों को मन में ले आना चाहिए । ऐसा अनुभव करना चाहिए कि मैं किसी देश विशेष का रहने वाला नहीं, अपितु सारे जगत् का वासी हूँ और लोक परलोक मेरी उस जगत् की दीवार ही हैं । प्रतिदिन एकबार तो ऐसा कर लेना चाहिए कि मैं सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रों आदि

के बीचों बीच खड़ा हूँ और इन सब के साथ मेरा चिरस्थायी सम्बन्ध है । जैसे स्वास्थ्य-रक्षा के लिए विशाल खुले मैदान में सुन्दर पवित्र वायु का सेवन किया जाता है, इसी प्रकार असंख्यात नक्षत्रों से सुशोभित इस संसार में खड़ा होकर इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

**तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।**
**धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**

यह सारा संसार जिस शक्ति से विकसित हो रहा है, उसी दिव्य ज्योति का हम ध्यान करते हैं । वह हमारी बुद्धि का प्रेरक—चलाने वाला हो ।

ब्रह्म का ध्यान करने की यह प्राचीन पद्धति जैसी महत्त्वपूर्ण और उदार है वैसी ही अत्यन्त सरल भी है। इस में किसी प्रकार की व्यर्थता और बनावट का प्रवेश नहीं।

बाह्य जगत् और आन्तर बुद्धि, इन दोनों के सिवाय हमारे पास और है ही क्या ? इस संसार और बुद्धि को भगवान् अपनी अथक शक्ति से रात दिन प्रेरणा कर रहे हैं । इसी बात को अनुभव कर लेने से भगवान् के साथ हमारा चिर सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है । मैं नहीं जानता कि किसी दूसरे पुरुषार्थ, सामग्री या कृत्रिम साधन अथवा मानसिक विचारों से ऐसा होना सम्भव है। इस पवित्र मन्त्र के अभ्यास में दूसरे किसी प्रकार के तर्क-वितर्क या किसी प्रकार के मतभेद और विवाद का अवकाश नहीं है, और न ही इसमें कोई संकीर्णता ही पायी जाती है ।"

लोकमान्य तिलक कहते हैं कि कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा गायत्री मन्त्र में विद्यमान है । इसी से सत् असत् का विवेक होता है, इसी से आत्मा को प्रकाश प्राप्त होता है ।

महामना पं० मदनमोहन मालवीय जी का यह कथन है कि गायत्री में ईश्वर परायणता के भाव उत्पन्न होने की शक्ति है, साथ ही वह भौतिक अभावों को दूर कर सकती है ।

महात्मा गांधी कहते हैं कि गायत्री मन्त्र का स्थिर चित्त और शान्त हृदय से किया हुआ जप आपत्तिकाल के सङ्कटों को दूर करने का प्रभाव रखता है और आत्मोन्नति के लिए उपयोगी है ।

स्वामी रामतीर्थ जी का कहना है कि राम को प्राप्त करना सब से बड़ा कठिन काम है । गायत्री का अभिप्राय बुद्धि को काम-रुचि से हटाकर राम-रुचि में लगा देना है जिसकी बुद्धि पवित्र होगी वह राम को प्राप्त करने का काम कर सकेगा ।

डा० सर राधाकृष्णन का कथन है कि गायत्री हम में पुनः नये जीवन का स्रोत उत्पन्न करने वाली प्रार्थना है. जो कि सार्वभौमिक प्रार्थना है और जो अत्यन्त लाभदायक है ।

जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य जी का कथन है कि गायत्री की महिमा का वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर है । बुद्धि का शुद्ध होना इतना बड़ा कार्य है कि जिसकी समता संसार के और किसी काम से नहीं हो सकती ।

# एक साधारण व्यक्ति के अनुभव

यह तो बड़े-बड़े शास्त्र, ऋषियों, मुनियों तथा विद्वानों के आदेश और अनुभव हैं । अब एक साधारण व्यक्ति के अनुभव भी पढ़ लीजिए ।

आयु होगी आठ वर्ष की । हँसने खेलने के दिन थे परन्तु वह बालक निराश हताश था । संसार की कोई सूनी ठौर खोजकर वह रोया करता था । साथ ही अपनी मूक भाषा में अपने गाँव से दूर दीखती हुई उन पहाड़ियों से पूछा करता—मेरे से कोई भी प्रसन्न नहीं रहता, यह क्या बात है ? मास्टर, मित्र, सगे सम्बन्धी और दूसरे सभी मुझ से प्रेम-व्यवहार क्यों नहीं करते ? लेकिन वे पहाड़ियाँ निर्जीव थीं और थीं निश्चल और निष्प्राण । वे भला क्या उत्तर देतीं परन्तु एक दिन इस बालक की सजल आँखों को देख कर, उसके मुर्झाये चेहरे को देखकर (स्वर्गीय) स्वामी नित्यानन्द जी कारण पूछ बैठे। बालक ने कुण्ठित स्वर से कहा—मेरा जीवन निरर्थक है। मुझ से कोई प्रसन्न नहीं । किसी भी विषय में मेरा प्रवेश नहीं, ऐसे जीवन से क्या लाभ ? स्वामी जी ने ढारस बँधाते हुए कहा, निराश मत होओ, मैं तुम्हें एक उपाय बतलाता हूँ; उसका सेवन करो । तुम्हारे हृदय को शान्ति मिलेगी और सब शोक तथा विघ्न बाधाएँ दूर हो जायेंगी। बालक ने बालू के कणों में पानी की मिठास का अनुभव किया । इस अन्धकारमय संसार में उज्ज्वल ज्योति का मधुर आभास पाया । वह बालक कहने लगा—बताइए, बड़ी कृपा होगी । इसके बाद स्वामी जी ने कागज

के टुकड़े पर गायत्री मन्त्र लिख कर कहा—प्रातः उषाकाल प्रारम्भ होने से पूर्व ही इस मन्त्र का जप किया करो और सुनो, खाली जप करने से अधिक लाभ नहीं होता, इसके अर्थ भी जान लो और फिर इसी के अनुकूल अपना व्यवहार भी बनाओ। इसके अर्थों का तो बहुत बड़ा विस्तार है, हाँ, जप के लिए संक्षेप में यह स्मरण रखो—

हे रक्षक, प्राणाधार ! दुःखों को दूर करने वाले और सुखों को देने वाले भगवन् ! मैं आपके सुन्दर-दिव्य रूप का ध्यान करता हूँ, जो बड़ा श्रेष्ठ है और आप को वरता हूँ, अपने-आपको आपके अर्पण करता हूँ, हमारी बुद्धि को अपनी ओर ले चलो।

उस दिन से लेकर बालक प्रातः चार बजे से पूर्व ही उठ कर स्नान इत्यादि के पश्चात् एक आसन पर बैठकर गायत्री जप करने लगा। चार-पाँच मास के पश्चात् क्या हुआ कि स्कूल की जिस श्रेणी में वह सर्वदा पाठ स्मरण न होने के कारण पिटता रहा था अब श्रेणी में अच्छे नम्बर लेने लगा।। माता-पिता भी उसका मान करने लगे। अब तो उसकी काया पलटने लगी। प्रतिदिन उन्नति करने लगा। हर परीक्षा में ऊँचा स्थान पाने लगा। बालक से युवा हुआ। युवावस्था के प्रारम्भ में ही वो काम धन्धे में डाल दिया गया। वहाँ भी सर्वदा आगे ही आगे बढ़ता गया केवल ३०) रुपये मासिक पर उसने कार्य आरम्भ किया परन्तु शीघ्र ही इसी कार्यालय में मुखिया बना दिया गया। और थोड़े ही समय के पश्चात् उसने अपना निजी कार्य प्रारम्भ किया। उसमें तो

असाधारण सफलता प्राप्त हुई । धन-ऐश्वर्य यश और कीर्ति, गोधन, घोड़े, मोटरें आदि सारे ही वैभव एकत्र हो गये। पत्नी मिली, वो भी साक्षात् देवी । सन्तान वह मिली जो चमक उठी । साथ, सम्बन्धी सब के सब अनुकूल। और वृत्ति ऐसी कि सदा पराये काम आने में प्रसन्नता का अनुभव करने वाली । इतने बड़े वैभव के प्राप्त हो जाने पर भी तीव्र वैराग्य ने सब की ममता और मोह पर लात मारने की भी सामर्थ्य दे दी । और चतुर्थ आश्रम में जा पहुँचे ! अब वही बालक ८३ वर्ष का वृद्ध है । तब से लेकर अब तक इस बालक को एक दिन, एक रात स्मरण नहीं जब इसने गायत्री माता की पवित्र गोदी में बैठ कर अमृतपान न किया हो । गायत्री मन्त्र के जप तथा तदनुकूल आचरण बनाने से उसे जीवन में रस आने लगा । और वातावरण अनुकूल होने लगा ।

अब जब कभी जीवन-यात्रा की बात चलती है तो वो यही कहता है कि यह सब गायत्री माता की कृपा है—

**गायत्री के जपन से, मिटें सकल सन्ताप ।**
**प्रेम-मग्न हो भक्त जन, जपें निरन्तर जाप ॥**

## स्त्रियों का अधिकार

गायत्री मन्त्र के जप तथा साधन के अधिकारी मनुष्यमात्र हैं । परन्तु कुछ लोग इस पर आपत्ति करते हैं । वे कहते हैं कि स्त्रियों को गायत्री-साधना का—गायत्री-जप का अधिकार नहीं है । यह कहना वेद शास्त्र तथा इतिहास विरुद्ध है । इसलिए इसका कुछ

समाधान आवश्यक है ।

वेद तथा शास्त्रों ने पाँच देवताओं की पूजा लिखी है । इन पाँचों देवताओं में चार मूर्तिमान् देवता ये हैं–

(१) माता, (२) पिता, (३) आचार्य, (४) अतिथि अमूर्तिमान् पाँचवाँ देवता परमपिता परमात्मा है। सब से पहला पूजनीय देवता माता को ही बतलाया गया है तो क्या जो माता देवता है, उस माता देवता को ही गायत्री का अधिकार नहीं ? फिर गायत्री सारे वेदों का साँझा मन्त्र है । वेद में जैसा पुरुषों का अधिकार है, वैसा ही स्त्रियों का भी है । जिस प्रकार वेदमन्त्रों के दर्शनकर्ता ऋषि हुए हैं, उसी प्रकार ऋषिकाएँ भी हुई हैं । ऋग्वेद के दशम मण्डल ८५वें सूक्त के सारे मन्त्रों की ऋषिका सूर्या सावित्री है । ऋषि अथवा ऋषिका के अर्थ हैं, मन्त्रों को देखने वाला, प्रचार करनें वाला या मन्त्रों को देखने वाली या प्रचार करने वाली । इसी प्रकार और भी सहस्रों मन्त्रों की ऋषिकाएँ देवियाँ थीं । तैत्तिरीय ब्राह्मण में यह इतिहास है कि सोम ने सती सावित्री को तीन वेद दिये। इसी तैत्तिरीय ब्राह्मण के १।१।४ में मनु की पुत्री इड़ा का वर्णन करते हुए उसे 'यज्ञान् काशिनी' कहा गया है। यज्ञान् काशिनी का अर्थ सायणाचार्य ने यह किया है– यज्ञ–तत्त्व–प्रकाशन–समर्था । इड़ा ने अपने पिता को यज्ञ सम्बन्धी सम्मति देते हुए कहा–मैं आपकी अग्नि का ऐसा आधान करूँगी, जिस से पशु–भोग, प्रतिष्ठा और स्वर्ग की प्राप्ति होगी । और शतपथ ब्राह्मण में मैत्रेयी को 'ब्रह्मवादिनी' कहा है । यज्ञ में निपुणता और वेद का प्रवचन वेद पढ़ कर ही हो सकता है ।

महाभारत शल्य पर्व में लिखा है—

**अत्रैव ब्राह्मणी सिद्धा कौमारब्रह्मचारिणी ।**
**योगयुक्ता दिवं प्राप्ता तपःसिद्धा तपस्विनी ॥**

महाभारत० ५४ । ६॥

योगसिद्धि को प्राप्त छोटी ही अवस्था से वेदाध्ययन करने वाली तपस्विनी सिद्धा नाम की ब्राह्मणी मुक्ति को प्राप्त हुई ।

इसी प्रकार महात्मा शाण्डिल्य की पुत्री 'श्रीमती' निरन्तर वेदाध्ययन में प्रवृत्त रहती और शिवा नाम की देवी तो वेदों में पारङ्गत थी । महाभारत निर्णय में आचार्य श्री आनन्द तीर्थ जी ने लिखा है कि उत्तम स्त्रियों को द्रौपदी की तरह वेद पढ़ना चाहिए ।

श्री शङ्कराचार्य को जिस भारती देवी के साथ शास्त्रार्थ करना पड़ा था, उसके सम्बन्ध में 'शङ्कर दिग्विजय' में लिखा है—भारती देवी सर्वशास्त्र तथा सभी अङ्गों सहित सब वेदों और वाक्यों को जानती थी ।

स्मृतियों और पुराणों से भी यह सिद्ध होता है कि वेदाध्ययन का जैसा अधिकार पुरुषों को है, वैसा ही स्त्रियों को भी है । गायत्री-मन्त्र वेदों का ही मन्त्र तो है परन्तु यदि यह कहा जाय कि स्पष्ट रूप से किसी शास्त्र में गायत्री जप का विधान स्त्रियों के लिए नहीं किया तो इसके उत्तर में वसिष्ठ स्मृति का यह प्रमाण विद्यमान है—

**मनसा भर्तुरभिचारे त्रिरात्रं क्षीरौदनं वा भुञ्जानाऽधःशयात् । ऊर्ध्वत्रिरात्रादप्सु निमग्नायाः सावित्र्यष्टशतेन शिरोभिर्जुहुयात् पूता भवतीति**

**विज्ञायते ॥ २७ । ७ ॥**

यदि स्त्री के मन में पति के प्रति दुर्भाव आवे तो उस पाप का प्रायश्चित्त करने के साथ गायत्री के १०८ मन्त्रों से सिर में आहुति देने से वह पवित्र होती है ।

(यहाँ आहुति का अर्थ जल से है ।)

प्रमाण तो कितने ही एकत्र किये जा सकते हैं, परन्तु ग्रन्थ का विस्तार-भय रोकता है । इतने ही से सिद्ध है कि गायत्री साधना का पूरा अधिकार स्त्रियों को भी है । और वेद भगवान् ने तो पति-पत्नी दोनों को यज्ञ करने का आदेश दिया है । अतएव जो शङ्का स्त्रियों के सम्बन्ध में की जाती है, वह सर्वथा निर्मूल है ।

देवियों को बिना किसी संकोच या शंका के पूरी भक्ति के साथ गायत्री की साधना करनी चाहिए ।

## गायत्री ही क्यों ?

गायत्री की जो महिमा तथा महत्त्व शास्त्रों, ऋषियों मुनियों तथा अन्यान्य विद्वानों और महानुभावों ने बतलाया है, उसे पढ़-सुनकर यह प्रश्न सामने आ जाता है कि गायत्री या सावित्री में वह कौन सी अनुपम बात है कि जिस से इस मन्त्र को गुरु मन्त्र का पद दे दिया है ।

फिर चारों वेदों में इस का वर्णन है । अथर्ववेद ने तो इसकी स्तुति गायन की ही है । ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के ६२ वें सूक्त का यह दसवाँ मन्त्र है । सामवेद उत्तरार्चिक १३ । ३ । ३ में इसका उल्लेख है । और यजुर्वेद में भी तीन बार इसका उपदेश है—३।३५, ३०।२,

३६।३ इतना भारी महत्त्व वेद भगवान् में स्वयं परमात्मा ने गायत्री मन्त्र को दिया है । तब यह सब कुछ बिना कारण के तो हो नहीं सकता । फिर इस गायत्री के इतने बड़े महत्त्व का कारण क्या है ?

(१) सब से पहला और प्रत्यक्ष कारण तो यह है कि गायत्री वेदमाता है । वेद की जननी के लिए सारे आस्तिकों में आदर नहीं होगा तो किस के लिए होगा?

(२) गायत्री-मन्त्र में भगवान् से केवल एक याचना की गई है कि हमारी बुद्धि को प्रेरणा कीजिए कि वह आप ही की ओर झुके । भगवान् प्रेरणा करने वाले तो हैं ही । जब प्रकृति सोई पड़ी थी तो भगवान् की प्रेरणा से ही उसमें गति उत्पन्न हो गई, और इतना बड़ा महान् विशाल जगत् सामने आ गया । साधक भी यही चाहता है कि प्रभो ! अपनी उसी प्रेरणा शक्ति से मेरी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा दीजिये कि वह आपके गुणगान और आज्ञापालन में लगी रहे ।

संसार में बुद्धि ही सर्वप्रधान है । बुद्धि के बल पर ही नन्हा सा बालक भी भारी भरकम शरीर के हाथी को पैरों के इशारे से इधर उधर चला लेता है । तुलसीदास जी ने ठीक कहा है—

**जहां सुमति तहां सम्पति नाना ।**
**जहां कुमति तहां विपति निधाना ॥**

और महाभारत में जहाँ यह वर्णन आता है कि देवता किस प्रकार साधक की रक्षा करते हैं और किस प्रकार कुकर्मी को दण्ड देते हैं तो वहाँ यह बतलाया है कि—

देवता दण्ड लेकर पशु-रक्षक की भांति पुरुष की रक्षा नहीं करते, वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे बुद्धि देते हैं और जिसे असफल बनाना चाहते हैं, उसकी बुद्धि पहले छीन लेते हैं ।

**न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत् ।**
**यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्यां संविभजन्ति तम् ॥**
**यस्मै देवाः प्रयच्छन्ति पुरुषाय पराभवम् ।**
**बुद्धिं तस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति ॥**

उद्योगपर्व ३४।८०, ८१

इसलिए यह कहा गया है कि 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः' और फिर बुद्धि भी कौन सी ? सात्त्विकी बुद्धि । क्योंकि वैसे तो आज बुद्धि का बड़ा विस्तार दिखायी देता है परन्तु प्रभु-प्रकाश से वंचित यह बुद्धि सर्वनाश ही का कारण बन रही है । बुद्धि वही ठीक पथ-प्रदर्शन कराती है, जो प्रभु से युक्त हो चुकी हो । यही युक्त बुद्धि परम शान्ति देने वाली होती है । गायत्री मन्त्र में साधक यही कह रहा है कि भगवन् ! मेरी बुद्धि पर अपना रंग चढ़ा दो । भक्त और कोई याचना नहीं करता, केवल अपने आप को प्रभु-अर्पण कर उसी वेदी पर अपनी बलि चढ़ाना चाहता है । यह आत्म-समर्पण अनुपम है ।

(३) गायत्री-मन्त्र जिन २४ अक्षरों से बना है, और जिस प्रकार से इनका संगठन हुआ है कि इनके मौन अथवा मुख द्वारा उच्चारण से मानव-हृदय ही नहीं, अपितु सारे मस्तिष्क और सारे मर्मस्थलों की तन्त्रियां इसी प्रकार झंकृत हो उठती हैं, जिस प्रकार वीणा के तारों

को छेड़ने से अद्भुत मधुर स्वर सुनाई पड़ने लगते हैं। गायत्री-मन्त्र का जप, चाहे वह मानसिक हो या कण्ठ अथवा मुख द्वारा, जब गायत्री मन्त्र के शब्दों का उच्चारण होता है तो भीतर ही भीतर ऐसी तरंगें उठती हैं, जो बुद्धिस्थल, हृदयस्थल तथा ब्रह्मरन्ध्र पर एक अलौकिक वैज्ञानिक प्रभाव डालती हैं। यह इतनी सूक्ष्म क्रिया है कि इसे पूरा सावधान तथा समाहित चित्त वाला साधक ही देख सकता है परन्तु यह अनुभव सिद्ध है कि गायत्री जप तथा तदनुकूल आचरण बनाने से साधक का हृदय-कमल खिलने लग जाता है। उसे जीवन में कुछ माधुर्य प्रतीत होने लगता है। और धीरे धीरे जगत् के कार्य अधिक घबराहट उत्पन्न नहीं कर सकते।

(४) गायत्री-मन्त्र लोक परलोक दोनों को ही सुधारने वाला है। ज्यों-ज्यों बुद्धि सात्त्विक होकर विकसित होती जायेगी, त्यों-त्यों संसार के सारे वैभव सुलभ होने लगेंगे।

मनुष्य यही चाहता है कि उसकी आयु लम्बी हो, वह स्वस्थ रहे, उसकी सन्तान अच्छी सुखी और शक्ति-भक्ति वाली हो। धन, ऐश्वर्य की वह कमी अनुभव न करे। उसका यश और कीर्ति बढ़े। यही तो है संसार की सारी सम्पत्ति। इसके सम्बन्ध में वेद कहता है कि यह सब कुछ गायत्री मन्त्र की साधना से मिलता है।

रही प्रभु-दर्शन की बात। इस का स्पष्ट संकेत वेद मन्त्र में है कि यही गायत्री माता साधक को संसार का वैभव देकर फिर ब्रह्म लोक में भी ले जाती है। प्रभु का दर्शन या मोक्ष का अचूक साधन ज्ञान तथा भक्ति

ही बतलाया गया है । ये ही दो बातें मुख्यतया गायत्री मन्त्र में हैं । बुद्धि ही तो ज्ञान की आधार-शिला है । इसी के द्वारा तो ज्ञान-प्राप्ति हो सकती है । भक्ति कहते हैं, "ईश्वरप्रणिधान" को, भगवान् की शरणागति को और गायत्री में परमात्मा को वरेण्यं=वरने योग्य कहकर उसे वर लिया गया है । अपने आप को भगवान् के सामने बेच डाला गया है । पतिव्रता देवी के समान अब साधक के हृदय-मन्दिर में ओ३म् के अतिरिक्त किसी के लिए कोई स्थान नहीं । इस प्रकार गायत्री लोक-परलोक दोनों का आनन्द दिलाती है ।

(५) गायत्री-मन्त्र में भगवान् को सविता कहा गया है। सविता के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने पञ्च-महायज्ञविधि में लिखा है कि जो समस्त जगत् को उत्पन्न करता और सब का स्वामी है, वह सर्व पिता जगदीश्वर सविता परमात्मा है ।

वैसे सविता शब्द का अर्थ है, उत्पन्न करने वाला, प्रेरणा और आदेश देने वाला, ऐश्वर्यवान्, जन्म-मरण के दुःखों से छुड़ाने वाला । जब साधक सविता शब्द से भगवान् को पुकारता है तो वह यही भावना करता है कि मेरी बुद्धि को वह प्रेरणा करेगा, ताकि मैं ऐसे कर्म करूँ कि जिससे जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाऊं। सूर्य की तरह चमक कर दूसरों को सन्मार्ग दिखा सकूँ। प्राणि-मात्र के लिए सूर्यवत् लाभदायक बनूँ । इसी प्रकार से जब साधक "देव" कहता है तो उसे प्रेरणा होती है कि देव तो उसे कहते हैं कि जो विद्या-प्रकाश के पुञ्ज हों, जो नियमों पर चलने वाले हों, तब मैं भी इन गणों

को क्यों न धारण करूं ।

इसी प्रकार का शब्द "भर्गः" कहते हुए साधक जानता है कि इस का अर्थ सर्वश्रेष्ठ, सब से पवित्र, सब से अच्छा और तेजःस्वरूप है जब ऐसे प्रभु से मिलाप करना है तो साधक अपने आप को श्रेष्ठ, पवित्र, तेजस्वी और अच्छा बनाए बिना प्रभु से कैसे मिलेगा ? उसे अपना जीवन श्रेष्ठ बनाना ही होगा ।

निष्कर्ष यह है कि गायत्री मन्त्र की साधना करने वाले को गायत्री-मन्त्र के एक-एक शब्द की भावना को क्रिया में लाने की प्रेरणा होती है । यह भी इस मन्त्र का एक बड़ा महत्त्व है ।

(६) एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता गायत्री-मन्त्र में यह है कि इस में स्तुति-प्रार्थना-भक्ति के तीनों अंग विद्यमान हैं, परमात्मा के गुणगान का नाम स्तुति है । प्रार्थना का प्रयोजन यह है कि साधक अपने हृदय की पुकार नम्रता से सुनाये । भगवान् तो हृदय के अन्तिम कोर को भी जानते हैं । फिर भी साधक पूरे विनीत भाव से अपनी टेर प्रभु को सुनाये और फिर प्रभु के साथ मिलने की प्रतीक्षा करे ।

महर्षि दयानन्द से जब पूछा गया कि स्तुति, प्रार्थना, उपासना किसलिए करनी चाहिए ? तो उस का उत्तर उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में दिया है कि—स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहायता का मिलना, उपासना से मेल और उसका साक्षात्कार होना ।

गायत्री मन्त्र में है–'ओं भूर्भुवः स्वः ।' अर्थात् हे रक्षक, सारी सृष्टि के प्राणाधार, दुःखनाशक, सुख-स्वरूप या सत्‌चित्-आनन्द परमात्मा । 'तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि' आप सारे प्राणियों के माता पिता हैं। हर प्रकार का प्रकाश देने वाले हैं । आप ही वरने योग्य हैं । उपासना करने योग्य हैं । आपके उसी सर्वश्रेष्ठ स्वरूप का हम ध्यान करते हैं । 'धियो यो नः प्रचोदयात्।' हमारी बुद्धियों को अपनी ओर ले चलो । इसमें तीनों बातें आ गयी हैं ।

(७) गायत्री मन्त्र आत्म-समर्पण का मन्त्र है, ईश्वर-परायणता प्राप्त होने का मन्त्र है । इस का महत्त्व गायन करना असम्भव सा ही प्रतीत होता है । फिर भी कुछ संकेत ऊपर लिख दिये गये हैं ।

## गायत्री मन्त्र

**ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**

ओ३म् : परमात्मा का निज नाम, जिस की प्रेरणा से सारा संसार बनता है, जिस के सहारे ठहरता है और जिस में लय हो जाता है । रक्षक–

इसी ओ३म् के जप से मोक्षद्वार खुल जाते हैं । ओ३म् ही का ध्यान करके आत्मा को प्राप्त किया जाता है । जप के लिए इसका संक्षिप्त अर्थ 'रक्षक' लेना चाहिए ।

**भूः**–प्राणाधार

**भूवः**—दुःखों से छुड़ाने वाला

**स्वः**—सुख ज्ञान आनन्द देने वाला ।

**सवितुः**—प्रकाश स्वरूप सारे ऐश्वर्यों का दाता, जगत् का माता, पिता, प्रेरक ।

**देवस्य**—नियमों में चलाने वाले ज्ञान स्वरूप देव के।

**तत्**—उस ।

**वरेण्यम्**—वरण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य, उपासना करने योग्य । समर्पण करने योग्य ।

**भर्गः**—शुद्ध स्वरूप, पवित्र करने वाले तेज का।

**धीमहि**—हम ध्यान करते हैं (काहे के लिए ? इसलिए कि)

**यः**—जो सविता देव, परमात्मा ।

**नः**—हमारी, हम लोगों की, हम सब की ।

**धियः**—बुद्धियों को ।

**प्रचोदयात्**—प्रेरणा करे । अच्छे कर्मों में प्रवृत्त करे । अपनी ओर ले चले ।

हे प्राण प्यारे, दुःखों का नाश करने वाले, आनन्द देने वाले, रक्षक भगवन् ! जगत् के माता-पिता, प्रेरक देव के उस वरने योग्य शुद्ध स्वरूप पवित्र करनेवाले तेज का हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करे—अच्छे कामों में लगाए—अपनी ओर ले चले ।

गायत्री-मन्त्र की व्याख्या में अब तक अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं और अभी न जाने कितनी लिखी जायेंगी परन्तु इसकी पूरी व्याख्या फिर भी पूरी न हो सकेगी । यहाँ तो जप करने के लिए मन्त्र के संक्षिप्त अर्थ लिख दिये गये हैं ।

# साधकों के लिए उपयोगी

गायत्री-मन्त्र जप की साधना करने वाले के लिए कुछ उपयोगी बातें लिखी जाती हैं-

(१) गायत्री का जप करने वाले साधकों के लिए आवश्यक है कि वे अपनी मातृभाषा में इसके संक्षिप्त अर्थों या इसके भावार्थ को हृदयंगम कर लें ।

(२) साधक के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह अपने जीवन में यम, नियम, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान को पूरी सावधानी से ढालता चला जाय । इनको जीवन का अंग बनाए बिना गायत्री का जप पूरा तथा असाधारण लाभकारक नहीं होता ।

(३) अ-गायत्री-जप शुद्ध पवित्र होकर करना चाहिये । प्रातःकाल सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व जप प्रारम्भ करना चाहिये और सायंकाल को आकाश में भरपूर तारे निकलने तक । जप सन्ध्या के पश्चात् करना अच्छा है। और प्रातः हवन यज्ञ जप के पश्चात् तथा सायं हवन यज्ञ जप से पूर्व ।

ब-गायत्री-जप में बैठने के लिए कुशा ऊन या मृगछाला के आसन उपयुक्त हैं ।

स-गायत्री-जप प्रातः पूर्व की ओर तथा सायं पश्चिम की ओर मुख करके करना चाहिये । अथवा दोनों समय उत्तर की ओर मुख रखा जा सकता है ।

(४) मानस जप सब से श्रेष्ठ माना गया है । जहाँ तक हो सके जप मन से ही करना उचित है परन्तु

कई साधक कहते हैं कि यदि वे ध्वनि से जप न करें तो मन भागने लगता है । ऐसे साधक अपनी प्रकृति और सुविधा के अनुसार उपांशु (मौन रह कर परन्तु कण्ठ को प्रयोग में लगाते हुए या ओठ हिलाते हुए) भी जप कर सकते हैं परन्तु इस वाचिक या उपांशु जप में उच्चारण मुँह में ही होना चाहिए । ध्वनि इतनी हो कि दूसरा इस मन्त्र को सुन न सके ।

(५) साधक को पूरी सावधानी से अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अपनी प्रकृति के अनुकूल सात्त्विक भोजन करना चाहिए । अधिक मिरच, मसाले चंचलता बढ़ाते रहते हैं । रोग निवृत्ति के लिए इन का प्रयोग हानिकर नहीं ।

(६) गायत्री के जप के लिए एकान्त शान्त स्थान होना चाहिए । वर्ष भर में एक दो बार तो अवश्य किसी सुन्दर वन में जाकर गायत्री अनुष्ठान करना चाहिए ।

(७) गायत्री अनुष्ठान का प्रयोजन यह है कि सवा लाख या ग्यारह लाख या एक करोड़ गायत्री जप का व्रत लिया जाता है और उसे अपनी सामर्थ्यानुसार एक पक्ष, चालीस दिन या छः मास अथवा तीन वर्ष में पूर्ण करने का संकल्प किया जाता है । तब कुछ विशेष नियम भी होते हैं ।

(१) भूमि या तख्त पर सोना (२) एक समय भोजन और दूसरे समय अल्प दुग्धपान या फलाहार करना। (३) सप्ताह में एक दिन के अतिरिक्त मौन रहना या सर्वथा मौन रहना या दिन में एक ही घण्टा बोलना अथवा जैसा सुभीता हो वैसा व्रत ले लेना । और फिर

उस व्रत को पूरा करना । (४) ब्रह्मचर्य का पालन करना।

(८) प्रतिदिन गायत्री जप करने के लिए भी नियम बना लेना चाहिए । अपनी सामर्थ्यानुसार एक सौ, एक हजार, पाँच हजार, दस हजार या जितना जप प्रतिदिन हो सके उसका व्रत लेकर उसी पर आचरण करते चले जाना चाहिए ।

(९) यदि रोग अथवा किसी कारण से विघ्न पड़ जाय तो समय मिलने पर वह कमी पूरी कर लेनी चाहिए।

(१०) गायत्री-मन्त्र की साधना एक बहुत बड़ी साधना है । पूरी श्रद्धा भक्ति के साथ दृढ़ विश्वासी बन कर इसे साधना चाहिए । यह निश्चित जानिए कि इस मन्त्र के सम्यगनुष्ठान से साधक के लोक और परलोक दोनों सुधरेंगे ।

किसी ने ठीक कहा है—

**महामन्त्र जितने जग माहीं, कोऊ गायत्री सम नाहीं ।**
**सुमिरन हिय में ज्ञान प्रकासे, आलस पाप अविद्या नासे ॥**

॥ ओ३म् तत्सत् ॥

---

'गायत्री मन्त्र' का विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए महात्मा जी की 'आनन्द गायत्री-कथा' 'एक ही रास्ता' 'महामन्त्र' का स्वाध्याय करें ।

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द